स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

विद्यावाचस्पति (**Ph.D.**) उपाधि हेतु शोध विषय की रूपरेखा

शीर्षक

‘‘चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में आधुनिकता‘‘

शोधकर्ता

आरती किसनराव गुडधे

एम. ए. (हिंदी) वर्धा

शोध निदेशक

डॉ. संदीप एस. पाईकराव

सहयोगी प्राध्यापक तथा शोधनिदेशक

इंदिरा गांधी महाविद्यालय, सिडको, नांदेड

(2019)

1) प्रास्ताविक :

साहित्य की विधाओं में परस्पर तुलना करना संभव नहीं है परंतु कथा साहित्य में मानव समाज जीवन का जितना सजीव और वस्तुनिष्ठ प्रतिबिंब दिखाई देता है उतना शायद ही किसी अन्य विधा में दिखाई देता है। कथा साहित्य अर्थात कहानी और उपन्यास विधा गद्य की सर्वाधिक सशक्त विधा है। भाषा के व्यवहारिक रूप की विधिता कहानी और उपन्यासों में ही देखने मिलती है। हिंदी का कथा साहित्य अपने आरंभिक काल से ही प्रवाहमान रहा है। इस प्रवाह को अधिक पुष्ट करने हिंदी कथाकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनेक प्रतिभासंपन्न कथाकारों ने हिंदी कथात्मक साहित्य को समृद्ध किया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज के विविध समूदायों तथा स्त्री को शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला। सदियों से साहित्य के हाशिए पर रखे गये समूदायों को आब बिती को व्यक्त करने का अवसर मिला। परिणामस्वरूप समाज का आधा हिस्सा होने के बावजूद सदा से उपेक्षित–वंचित स्त्री भी अपने जीवनानुभावों को अभिव्यक्त करने लगी। इससे साहित्य और अधिक व्यापक और संपन्न हो गया। अनेक प्रतिभासंपन्न स्त्री साहित्यकारों का साहित्य सामने आने लगा। इससे साहित्य समृद्ध हुआ। हिंदी साहित्य को अपनी प्रतिभा एवं सक्रियता से समृद्ध करने वाली स्त्री रचनाकारों का बडे आदर के साथ लिया जाता है उनमें चित्रा मुद्‌गल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

चित्रा मुद्‌गल का समग्र जीवन एवं साहित्य स्त्री और उसकी संवेदना को प्रतिष्ठित करने के लिए समर्पित रहा है। उनके साहित्य में झांकने वाले पाठक वर्ग को अपनी अनुभूतियों की प्रतिच्छाया जब उसमें दिखायी देती है तो पाठक भाव विभोर हो जाता है। उनके सभी पात्र विशेषकर नारी पात्र अपने परिवेश में जीवन की जद्‌दाजे हद से जूझते लड़ते कभी लहुलुहान होते है तो कभी उस लड़ाई में विजय हासिल करते दिखलायी देते है। यही कारण है कि चित्रा जी अपने प्रारंभिक लेखनकाल से लेकर आज तक बराबर सम्मानित और समादृत बनी रही है और भविष्य में भी बनी रहेगी।

2) विषय चुनाव की भूमिका :

चित्रा मुद्गल का समस्त कथा साहित्य आधुनिक भारतीय समाज का वह दस्तावेज है जिसमें समाज का व्यापक प्रतिबिंब उभरता हुआ दिखाई देता है। चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य के प्रमुख पात्र अपनी आधुनिक सोच और समय के साथ तालमेल बिठाने में विश्वास रखते है। चित्रा मुद्गल अपनी अभिव्यक्ति में जिस प्रकार की तटस्थत बरतती है वह वास्तव में उनकी आधुनिक सोच का परिचायक है। तटस्थता से अभिप्राय है नितान्त वैयक्ति चिन्तन। जिसमें किसी के प्रति कोई भी भेदभाव या पक्षपात नहीं होता। सबको अपनी दृष्टि अपने भाव बोध से ही माना जाता है। बिना पक्षपात के, बिना किसी अनुराग और विद्वेष से अपने विचारों को बिना किसी परवाह किये व्यक्त करना ही तटस्थ होने का परिचायक है। चित्रा मुद्गल ने अपने लेखन में जीवन और लेखन को तटस्थता के साथ विवेचित किया है। आधुनिक विचारों का रचनाकार ही तटस्थतापूर्वक रचनाकर्म कर सकता है। चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य की यही विशेषता मुझे उनके साहित्य के प्रति विशेष रूप से आकर्षित करती रही है। चित्रा जी का प्रसिद्ध उपन्यास 'आवां' में चित्रा मुद्गल जी के समयसापेक्ष आधुनिक विचारों का प्रकटीकरण हुआ है उससे मैं बहुत प्रभावित हुई। यही कारण है कि मैं चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य पर अनुसंधान करने के लिए प्रेरित हुई। इसी क्रम में जब अपनी जिज्ञासा तथा शोध करने की इच्छा को मैंने आदरणीय डॉ. शेखर घुंगरवार सर जी के सामने व्यक्त किया तो सर ने मुझे चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य गहराई से पढ़ने के लिए कहा। मैंने उनके निर्देशों का पालन करते हुए चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य को पढना आरंभ किया। उनके साहित्य को पढ़ने पर मुझे यह महसूस हुआ कि चित्रा मुद्गल एक आधुनिक विचारों की रचनाकार हैं तथा उनका साहित्य आधुनिक विचारों का संवाहक है। इससे मैं इतनी प्रभावित हुई कि शोधकार्य के लिए प्रस्तुत विषय चयन करने की मनोकामना जब मैंने अपने शोध–निदेशक डॉ. गगगग के सम्मूख व्यक्त की तो उन्होंने भी इस विषय की मौलिकता को समझते हुए अपनी स्वीकृति प्रदान की। चित्रा मुद्गल का समस्त साहित्य आधुनिक विचारों का समर्थन करता है तथा पुराने–दकियानुसी विचार परंपरा का खंडन करता है। उनके साहित्य में प्रवाहमान आधुनिकता ने मुझे प्रभावित किया। यही कारण है कि मैंने अपना शोधकार्य 'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में आधुनिकता'' शीर्षकांतर्गत करने का निश्चित किया है।

3) शोध विषय का महत्व :

आधुनिकता एक ऐसा शब्द है जो विचार और रहन–सहन में एक नयापन द्योतित करता है। आधुनिकता के विरूद्ध है पुरणपंथी, प्रतिभागी तथा अप्रगत मानसिकता से ग्रस्त कुरूप जीवन दृष्टि। मानव समाज निरंतर उन्नति तथा प्रगति करनेवाला समाज है। मानव जीवन के जो कुद उपकारक मूल्य तथा विचार हैं तथा जो काल सापेक्ष हैं वे समय के साथ आगे बढ़ते है परंतु काल की कसौटी पर खरा न उतरनेवाले विचार–आचार पिछे छूट जाते है। परंतु जो विचार आधुनिक होते हैं वे सदैव कालसापेक्ष्य होते हैं। भारतीय समाज में जिन विचारकों, साहित्यकारों के विचार आधुनिक रहे हैं वे कालानुसरण करते हुए प्रत्येक पीढ़ि को प्रेरक रहे हैं। चित्रा जी के कथा साहित्य में स्त्री आर्थिक और सामाजिक बन्धनों से मुक्त होकर स्वार्जन करते हुए अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए संघर्ष करती हैं। चित्रा जी द्वारा चित्रित स्त्री रूप प्राचीन स्त्री से अलग है। पुरुषों पर आश्रिम नारी नहीं बल्कि आधुनिक सोच और जीवनदृष्टि से युक्त यह नारी अर्थाार्जन के लिए घर से बाहर निकलती है। जीवन के विविध क्षेत्रों में पूरी क्षमता से कूद पड़ती है। वर्तमान समय में स्त्री–पुरुष के समता का युग है। चित्रा मुद्‌गल अपने साहित्य में स्त्री–पुरुष समता का न केवल समर्थन करती है बल्कि उसका प्रबल समर्थन भी करती है। यही कारण है कि इस प्रकार के साहित्य पर नई दृष्टि से अनुशीलन करना आवश्यक है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार के विषय का अपना विशेष का अपना विशेष महत्व है।

4) शोधकार्य का उद्‌देश :

प्रस्तुत शोधकार्य का उद्‌देश्य चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में आधुनिकता का अनुशीलन करना है। प्रस्तुत शोधकार्य के प्रमुख्य उद्‌देश्य इस प्रकार है –

1. हिंदी कथा साहित्य के उद्‌भव एवं विकास का विवेचन करना।
2. आधुनिकता इस अवधारणा का विवेचन करना।
3. चित्रा मुद्‌गल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तृत परिचय देना।
4. चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य का विवेचन करना।

5. चित्रा मुद्गल की कहानियों में अभिव्यक्त आधुनिकता का अनुशीलन करना।
6. चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में अभिव्यक्त आधुनिकता का अनुशीलन करना।

चित्रा मुद्गल ने हिंदी कथा साहित्य को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण करने वाली महिला कथाकारों में चित्रा मुद्गल का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। चित्रा मुद्गल आधुनिकता के कारण समाज जीवन में, परिवार में हुए प्रभावों एवं परिणामों को मार्मिक रूप से शब्दबद्ध करती है। चित्रा मुद्गल के साहित्यिक योगदान का विवेचन करते हुए उनके साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिकता का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण, अनुशीलन करना ही प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य है।

5) संशोधन पद्धति :

प्रस्तुत शोधकार्य साहित्यिक अनुशीलन होने के कारन इसमें अनुशीलन शोध प्रणाली के साथ साथ परिशीलन और समिक्षन पद्धति के आधार पर निष्कर्ष निकाले जायेंगे। साथ ही आवश्यकता के अनुसार समस–समय पर सम्बन्धित विद्वानों से साक्षात्कार लेकर मौलिक निष्कर्ष जोडे जायेंगे।

6) संशोधन साधन :

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए मौलिक पुस्तकें, समिक्षा ग्रंथ इंटरनेट, विद्वानों से साक्षात्कार चर्चासत्र तथा प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं का आधार बनाकर सामग्री संकलन किया जाएगा।

7) संभाव्य निष्कर्ष :

संभाव्य निष्कर्ष अर्थात (Hypothesis) का शोध प्रविधि में अत्यंत महत्व माना जाता है। संभावित निष्कर्ष के सहारे ही शोधकार्य करते हुए प्रत्यक्ष निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं। प्रस्तुत शोधकार्य के संभाव्य निष्कर्ष इस प्रकार है –

1. आधुनिकता की अवधारणा ने भारतीय साहित्य को प्रभावित किया है।

2. आधुनिकता का चित्रण सबसे पहले साहित्य में हुआ है।
3. चित्रा मुद्‌गल का कथा साहित्य आधुनिकता को चित्रित करता है।
4. आधुनिकता के कारण चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक जीवन के परिवर्तनों का प्रभावी चित्रण हुआ है।
5. आधुनिकता के कारण समाज जीवन में आये बदलाव स्वरूप हुए भारतीय समाज जीवन का अंकन चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में किया गया है।

8) संशोधन कार्य की सीमाएँ :

प्रस्तुत शोधकार्य साहित्यिक अनुशीलन होने के कारण स्वाभाविक रूप से इसकी अपनी सीमाएँ है। हिंदी साहित्य का संसार चूँकि अत्यंत बृहद्‌ है इसलिए विषय के शीर्षकानुरूप 'चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में आधुनिकता' को केंद्र में रखकर ही शोधकार्य संपन्न होगा। शोधकार्य का प्रारूप अर्थात रूपरेखा जिस प्रकार की है उसी के अनुरूप शोधकार्य होगा। चित्रा मुद्‌गल एक बहुआयामी लेखिका है। उपन्यास तथा कहानियों के साथ–साथ चित्रा की ने अन्य विधाओं में भी विपुल मात्रा में लेखन किया है। परंतु प्रस्तुत शोधकार्य उनके द्वारा लिखित कथा साहित्य अर्थात कहानी तथा उपन्यासों पर आधारित है। चित्रा मुद्‌गल का कथा साहित्य और उसमें अंतर्निहीन संवेदनाओं का विभिन्न परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है किंतु हमने केवल चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त आधुनिकता को ही केंद्रीय स्थान दिया है। यही इस शोधकार्य की मौलिकता भी है और मर्यादा भी।

8) शोधकार्य की रूपरेखा :

शोधकार्य एक सुनियोजित अध्ययन है। शोधकार्य की रूपरेखा का अनन्यसाधारण महत्व होता है। 'चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में आधुनिकता' शीर्षकांतर्गत संभावित शोधकार्य की रूपरेखा इस प्रकार है।

अध्याय –

अध्याय पहला – हिंदी कथा साहित्य का उद्भव एवं विकास

अध्याय दूसरा – आधुनिकता : अर्थ एवं स्वरूप

अध्याय तीसरा – चित्रा मुद्‌गल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय चौथा – चित्रा मुद्‌गल की कहानियों में आधुनिकता

अध्याय पाँचवा – चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों में आधुनिकता

अध्याय छटा – उपसंहार

– संदर्भसूची

शोध निदेशक

डॉ. संदीप एस. पाईकराव

हिंदी विभाग, इंदिरा गांधी महाविद्यालय,

सिडको, नांदेड

शोधकर्ता

सुश्री आरती किसनाव गुडधे

संदर्भ ग्रंथ सूची :

अ) आधार ग्रंथ

उपन्यास :

1. एक जमीन अपनी – चित्रा मुद्गल
2. आवां – चित्रा मुद्गल
3. गिलिगडु – चित्रा मुद्गल
4. माधवी कन्नगी – चित्रा मुद्गल

कहानी संग्रह –

1. लाक्षागृह – चित्रा मुद्गल
2. अपनी वाप – चित्रा मुद्गली
3. इस हमाम में – चित्रा मुद्गल
4. ग्यारह लम्बी कहानियाँ – चित्रा मुद्गल
5. जगदम्बा बाबू गांव आ रहे है – चित्रा मुद्गल
6. चर्चित कहानियाँ – चित्रा मुद्गल

आ) सहायक ग्रंथ

1. आधुनिकता और भारतीय परम्परा – महावीर दाधीच
2. दि मिथ आफ मॉडर्निटी – चार्ल्स बार्दोउन
3. सह चिंतन – अमृतराय
4. आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण – रमेशकुंतल मेघ
5. आधुनिकता : साहित्य के संदर्भ में – गंगाप्रसाद विमल
6. नवें दशक की हिन्दी कहानियों में नारी परिकल्पना – डॉ. संगीता व्यास
7. चित्रा मुद्गल का साहित्य संसार – रतिलाल बिछोतिया
8. औरत : कल आज और कल – आशा रानी व्होरा

9. महिला उपन्यासकार पारिवारिक जीवन के बदलते संदर्भ – डॉ. कल्पना पाटोळे
10. उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री – डॉ. शशिकला त्रिपाठी
11. स्त्री लेखन और समय के सरोवर – हेमलता महिश्वर

इ) पत्र–पत्रिकाएँ :

1. हंस
2. मधुमति
3. नया ज्ञानोदय
4. अलोचना
5. भाषा
6. साहित्य शिल्प
7. आज की गजल

ई) शब्दकोश :

1. राजपाल हिंदी शब्दकोश – डॉ. हरदेव बाहरी
2. फारशी–हिंदी शब्दकोश – इसा रिजा जादेड, डॉ. चंद्रशेखर